स्व-संघस्थ साधु-साध्वी व श्रावक-श्राविकाओं को प्रवचनसार का स्वाध्याय करवाते हुए
आचार्य कनकनन्दी गुरुदेव (ग.पु.कॉ., सागवाड़ा-2016)

(1) सामान्य ज्ञान व नैतिक आचरण

सामान्य ज्ञान व नैतिक आचरण नहीं है सामान्य, किन्तु है असामान्य

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : यमुना किनारे.....)

सामान्य ज्ञान को तुच्छ माना न करो, प्राणवायु सम उसे ग्रहण करो।
जिससे जीवन क्रियावन्त होगा सही, नैतिक आचरण भी बनेगा सही।।
जीवन जीने की कला इससे आती, दैनिक क्रियाएँ सुचारू चलती।
सोना-जागना व खाना-पीनादि क्रिया, चलना-बोलना लेना-देनादि क्रिया।।
हित-मित स्वास्थ्यकर अहिंसक भोजन, हित-मित-प्रिय सत्य-तथ्य वचन।
अनुशासित शालीन स्व-पर हितकर हो काम, आलस्य प्रमाद रहित पावन मन।।
अनावश्यक समय शक्ति का न हो अपव्यय, धन-जन-साधन का हो सदुपयोग।
दूषण-प्रदूषण रिक्त हो भाव व स्थान, व्यवस्थित सादा-सीधा-शांत जीवन।।
एकाग्रचित्त से सुने हितकर वचन, सुनकर मनन करे तथा आचरण।
निन्दा चुगली वाद-विवाद मुक्त जीवन, ईर्ष्या-द्वेष-घृणा-तृष्णा रिक्त पावन।।
दया-सेवा-परोपकार युक्त हो मन, नीति-नियम-सदाचार युक्त हो काम।
हिताहित विवेक से करे सही निर्णय, सत्य-तथ्य-उदार युत सही वर्णन।।
सत्य-समता-सहिष्णु भाव ही धरो, अनावश्यक अयोग्य काम न करो।
समयोचित संतुलित काम ही करो, ढोंग-पाखण्ड-आडम्बर-द्वंद्व न करो।।
बिना बुलाये न जाये अन्य के घर, खट-खट आवाज न करे अन्य के द्वार।
सकारण शालीनता से ही आह्वान करे, अनुमति बिना (अन्य) कुछ न ग्रहण करें।
सज्जन अतिथियों के लिए स्वागत लिखें/(करें), दुष्ट-दुर्जन (पापियों) के लिए निर्गत लिखें/(करें)।
यथायोग्य मैत्री प्रमोद समता दया विचारे, द्रव्य क्षेत्र काल भाव अनुसार आचरे।।
अयोग्य हेतु 'नहीं'/(नास्ति) का प्रयोग करें, सन्मति सहित ही 'सहमत' आचरे।
भेड़-भेड़िया-बक सम नहीं आचरे, स्वावलंबी अनुशासी भाव व्यवहार करें।।
स्वयं हेतु अन्य से अहित न आचरे, अन्य से जो चाहते वह स्वयं भी करें।
दीप बनकर स्व-पर ही प्रकाशी बनो, आदर्श बनाने पूर्व स्वयं आदर्श हो।।
गलती से शिक्षा लेकर आगे ही बढ़ो, काम करो अनुभव से विकास करो।
आत्मविश्वासी ध्येयनिष्ठ पुरुषार्थी बनो, सामान्य से असामान्य 'कनक' बनो।।

Scanned by TapScanner

(2) जैन धर्मावलम्बियों की भावना

''स्व-पर-विश्व व स्वधर्मी-विधर्मी-अधर्मी प्रति''

मैत्री-प्रमोद, कारुण्य-माध्यस्थ भाव

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : यदि भला किसी का....., हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.....)

सुनो ! सुनो ! हे ! दुनिया वालों, जैन धर्मियों की उदार वृत्ति।
स्व-पर-विश्व स्वधर्मी-विधर्मी-अधर्मी जीव प्रति जो होती प्रवृत्ति।। (1)
जैन धर्मी के लक्ष्य होते हैं, स्वयं को शुद्ध-बुद्ध बनाने के।
सत्य-समता शान्ति के उपासक, अनेकान्तमय भाव से।। (2)
हर जीव प्रति मैत्री भावना, अदुःख जननी भावना मैत्री।
क्षुद्र जीव से पंचेन्द्रिय (जीव) तक में, सदा रखते हैं भावना मैत्री।। (3)
किसी से भी न रखते राग द्वेष मोह पक्षपात ईर्ष्या व घृणा।
हर जीव की शुद्ध अवस्था है, ''सव्वे सुद्धाहु सुद्ध णया''।। (4)
किसी भी जीव से राग द्वेषादि करना ये तो होती, भाव की हिंसा।
भाव हिंसा ही तो निश्चय हिंसा, भाव अहिंसा से न होती हिंसा।। (5)
भाव हिंसा ही स्व आत्मा की हिंसा, अन्य जीवों की हो हिंसा या अहिंसा।
अतः जैन धर्मावलंबी विश्वकल्याण की करते मंगल आकांक्षा।। (6)
गुणीजनों में करते हैं प्रमोद, जिसे कहते है ''विनय तप''।
पूजा आरती, बहुमान प्रशंसा, वैयावृत्ति दान आदि होते प्रमोद।। (7)
देव-पूजा व गुरु उपासना जैनों के होते प्राथमिकी कर्म/(धर्म)।
इसी से होती सम्यग्दर्शन विशुद्धि, विनय होता मोक्ष का द्वार।। (8)
दुःखी-रोगी व संकट ग्रस्त जीवों के प्रति करते हैं वे 'करुणा भाव'।
दयादत्ति रूप में करते दान, व रक्षा रूप में करते ''अभयदान''।। (9)
करुणाभाव धरते हर दुःखी जीव प्रति, भले वे होते विधर्मी या अधर्मी।
मनुष्य सह पशु-पक्षी कीट-पतंग आदि प्रति उदार जैन धर्मी।। (10)
विपरीत प्रति माध्यस्थ भाव रखते, जो होते हैं जैन धर्मावलंबी।
विपरीत वालों के प्रति नहीं करते, ईर्ष्या द्वेष घृणा आदि जैन धर्मी।। (11)
ईर्ष्या द्वेष घृणा आदि को अधर्म स्वरूप जानकर त्यागते नवकोटि से।
सत्य-समता शांति को धर्म मानकर सेवन करते हैं नवकोटि से।। (12)
इन सब गुणों से जो रहित होते, वे न होते सच्चे जैन धर्मी।
सच्चे जैन धर्मी के महान् गुणों को, संक्षेप से लिखा है 'कनकनन्दी'।। (13)

***

(3) विश्व को शांति की शिक्षा देने वाला

भारत अशांत क्यों?

(पृथ्वी में शांति की दृष्टि से भारत का स्थान 143वाँ)

(चाल : तुम दिल की....., सायोनारा.....)

विश्व भरण-पोषण करने से...आर्यावर्त से भारत हुआ...
ज्ञान-विज्ञान व शांति की...शिक्षा से विश्वगुरु भारत हुआ...(1)...
जैन-बौद्ध व हिन्दू धर्म ने...विश्व को ये अवदान दिया...
अणु से लेकर ब्रह्माण्ड तक व...आत्मा-परमात्मा का पाठ पढ़ाया...(2)...
इह-परलोक व मोक्ष सुख हेतु...विभिन्न उपायों का शोध (बोध) किया...
तन-मन-आत्मा के सुख हेतु...आयुर्वेद से ध्यान (तक) शोध किया...(3)...
अहिंसा-शाकाहार-अचौर्य-ब्रह्मचर्य...सत्य-अपरिग्रह व क्षमा सेवा से...
स्व-पर-विश्व शांति पाठ पढ़ाया...अनेकान्त-समन्वय दान से...(4)...
किन्तु अभी वह महान् देश...अपनी महानता/(संस्कृति) से दूर हो रहा...
जिससे स्वतंत्र भारत में भी...अनेक दोष उत्पन्न हुए...(5)...
भ्रष्टाचार-मिलावट-शोषण...दिखावा-आडम्बर-भेदभाव से...
ईर्ष्या-द्वेष-तृष्णा-निन्दा-कलह से...अशांत है देश भ्रष्टाचार से...(6)...
फैशन-व्यसन-बलात्कार-चोरी...रोग-गरीबी व आत्महत्या से...
गन्दगी-प्रदूषण-दुर्घटना से...अशांत है देश अव्यवस्था से...(7)...
शिक्षा-राजनीति-कानून-व्यापार...सर्विस तथा धर्म में...
नहीं है प्रायः न्याय-नीति...सत्य-सदाचार हर लोगों में...(8)...
जिसके कारण भारत अभी...शांति में भी पिछड़ा देश बना...
पृथ्वी के एक सौ बासठ (162) देशों में...
एक सौ तैतालीसवाँ (143) स्थान बना...(9)...
केवल बाह्य सत्ता-संपत्ति-शिक्षा...तथाहि धर्म से न शांति मिलती...
शांति तो आत्मा का स्वभाव...जिससे अंतरंग (से) शांति मिलती...(10)...
इसी हेतु चाहिये सत्य-समता...शुचि सहिष्णुता व सन्तोष...
हर जीव इस हेतु प्रयास करे...'कनक' प्रयासरत भाव से...(11)...

***

(4) सत्य-असत्य व निन्दा-प्रशंसा

(चाल : छोटी-छोटी गैया....., सायोनारा....., जय हनुमान.....)

सत्य व असत्य स्वरूप को जानो...निन्दा व प्रशंसा का रूप पहचानो...
सत्य व प्रशंसा को स्वीकारो...असत्य-निन्दा को शीघ्र परिहारो...
परम सत्य है वस्तु स्वरूपमय...स्वयं का सत्य है स्व-शुद्धात्मामय...
इनका कथन है यथार्थ/(निश्चय) प्रशंसा...
इससे विपरीत है निश्चय निन्दा /(असत्य)...(1)...
षट् द्रव्य होते परम सत्य स्वरूप...स्व-परम सत्य है स्व-शुद्धात्मा रूप...
शुद्धात्मा कथन है परम प्रशंसा रूप...गुण व गुणी की कीर्ति होती प्रशंसा...
इससे विपरीत है असत्यमय...व्यवहार-सत्य अथवा अशुद्धमय...
इनकी कीर्ति नहीं यथार्थ प्रशंसा...व्यवहार रूप या मिथ्या-प्रशंसा...(2)...
सही प्रशंसा होती पञ्चविध विनय...दर्शन-ज्ञान-चारित्र-तप विनय...
इनसे युक्त गुणियों का विनय...उपचार विनय सह पञ्चविध विनय...
ये है पञ्चविध मोक्ष हेतुक विनय...स्वर्ग-मोक्ष दायक सही विनय...
लोकानुवृत्ति काम-भय-अर्थ विनय...
संसार हेतुक-अशुद्ध-लोक विनय...(3)...
लोक विनय नहीं है सही प्रशंसा...इससे न मिलती मोक्ष-अवस्था...
आध्यात्मिक गुणहीन न होते महान्...धन-जन-पदवी से न कोई महान्...
राग-द्वेष-मोह-काम-क्रोधादि युक्त...ईर्ष्या-तृष्णा-घृणा-विद्वेष युक्त...
जो जीव होते हैं वे अशुद्ध-सत्य...उनके कथन होते निन्दा व असत्य...(4)...
विस्तार ज्ञान हेतु स्वाध्याय करो कृति का...
आत्म विकास हेतु अनुकरण इसी का...
असत्य व निन्दा परिहार करो मानव...
'कनक' का आह्वान सुनो विश्व मानव...(5)...

***

Scanned by TapScanner

(5) सांसारिक उपलब्धियों में मोहित होना :

अंधश्रद्धा (मिथ्यात्व)

(चाल : भातुकली (मराठी)....., छोटी-छोटी गैया.....)

गाथा- अत्थो खलु दव्वमओ दव्वाणिगुणप्पगाणि भणिदाणि।
तेहिं पुणो पज्जाया पज्जयमूढ़ा हि परसमया।। (93) प्रव.सार.

हिन्दी- अर्थ/(ज्ञेय) निश्चय से द्रव्यमय, द्रव्य को गुणात्मक कहा।
द्रव्य-गुणों की भी पर्याय होती, पर्यायमूढ़ ही अंधश्रद्धा।।

रहस्य-

सत्य श्रद्धान से होता सम्यक्त्व, सत्य ही होता ज्ञान व ज्ञेय।
सत्य स्वरूप ही द्रव्य होता, द्रव्य होता गुण-पर्यायमय।।
द्रव्य-गुण-पर्यायों को यथार्थ मानना, यह होता शुद्ध सम्यक्त्व।
यथार्थ न मानना या पर्याय में, मोहित होना होता मिथ्यात्व।। (1)
चतुर्गति-चौरासी लक्ष योनि में, जिस अवस्था में रहते जीव।
उस अवस्था में मोहित होना, यह है जीवों का मिथ्यात्व भाव।।
मनुष्य गति के जीव उस अवस्था को, यथा ही मानते हैं निज रूप।
नर-नारी बालक युवा-अवस्था, धनी-गरीब मानना है मिथ्या रूप।। (2)
इन अवस्थाओं को ही स्व-रूप मानकर, उसमें ही रहते हैं जो लवलीन।
उसके लिये करे मोह-ममत्व, राग-द्वेष तृष्णा व पाप विभिन्न।।
प्रजनन करके वंश बढ़ाकर, मानते रहेगा मेरा अस्तित्व।
परिग्रह से स्थिर रहेगा अस्तित्व, ये सब भाव हैं (घोर) मिथ्यात्व।। (3)
ऐसा ही सत्ता-संपत्ति-बुद्धि, प्रसिद्धि को मानते स्व-स्वरूप।
तथाहि शरीर व परिवारजन को, जो मानते हैं निज-स्वरूप।।
इन सब में सुख समृद्धि मानते, इसी में ही रहते हैं लवलीन।
संकल्प-विकल्प-संक्लेश करते, वे सभी अंधश्रद्धा में लीन।। (4)
जीव स्वरूप सच्चिदानंदमय, जो अमूर्तिक स्वयं में पूर्ण।
चतुर्गति-चौरासी लक्ष योनि सब, होती वैभाविक पर्यायमय।।
शुद्ध आत्मा ही है मम स्वद्रव्य/(स्वरूप), ज्ञान-दर्शन-सुख अनंत गुण।
ऐसा श्रद्धान करते वे ही, निश्चय (से) सम्यक्त्व सम्पन्न।। (5)
शुद्धात्मा श्रद्धान ही आत्मविश्वास, अन्यथा है अंधश्रद्धान।
आत्मविश्वास-ज्ञान-चारित्र रूप, 'कनकनन्दी' का निज श्रद्धान।। (6)

***

(6) दान-पूजादि के उद्देश्य-

गृहस्थ संबंधी हर कार्य से उपार्जित पाप दूर हेतु, सातिशय-पुण्य व मोक्ष प्राप्ति हेतु

(चाल : तेरे प्यार का आसरा)

देव-शास्त्र-गुरुओं की जो उपासना करते,
श्रद्धा भक्ति सहित जो आराधना करते।
(दया) दम-सेवा-पूजा व मंदिर निर्माण,
नवकोटि से जो करते बांधे सातिशय पुण्य। (1)
गृहस्थ संबंधी हर कार्य के द्वारा, अवश्य ही पाप बंधे नवकोटि द्वारा।
पढ़ाई व्यापार कृषि शिल्प-नौकरी शादी से,
निश्चय ही पाप बंधता है नवकोटि से। (2)
उपार्जित पाप को दूर करने हेतु,
दान-सेवा-पूजादि करते आत्म शुद्धि हेतु।
सिंधुसम होता पुण्य बिन्दु सम पाप,
परंपरा से मोक्ष हेतु बने पुण्य कारण। (3)
दानादि जो नहीं करते वे न होते श्रावक,
श्रद्धा विवेक क्रिया युक्त होते श्रावक।
मोक्ष प्राप्ति हेतु पालन करते हैं धर्म,
आगम अनुकूल दान-पूजादि श्रावक धर्म। (4)
आगमोक्त दान-पूजादि को नहीं करते,
करने वालों को जो सही नहीं मानते।
निन्दा-विरोध या कलह आदि करते,
घोरातिघोर पापी उसे आगम बताते। (5)
आगम अनुकूल पावन भावना सहित,
समता शांति उदार भावना युक्त।
मोक्ष प्राप्ति के महान् लक्ष्य से युक्त,
'कनक' सेवनीय धर्म आत्मविशुद्धि युक्त। (6)

***

(7) उत्तम आहार पद्धति

(चौका में सोला से आहार दान)

(चाल : जय हनुमान....., छोटी-छोटी गैया.....)

उत्तम चौका के स्वरूप जानो...द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव में मानो...
नवधाभक्ति-सप्त गुण है सोला (16)...
उत्तम द्रव्यादि चतुष्टय है चौका...(1)...
द्रव्य होता है भोजन व पात्र...प्रदूषण रहित होता है क्षेत्र...
दिवस में योग्य आहार काल...सप्त गुणादि सोला होता है भाव...(2)...
जैविक खेती से उत्पन्न अन्न...फल सब्जी व मसाला विभिन्न...
प्राकृतिक व ताजा होना चाहिए...रसायन प्रयोग न होना चाहिए...(3)...
धोकर साफ भी करना चाहिए...साबुत या मोटा आटा चाहिए...
सब्जी-फल को भी मोटा बनायें...योग्य छिलका सहित बनायें...(4)...
अधकच्चा-अधपका भी अभक्ष्य होता...परिपक्व भक्ष्य व स्वास्थ्यप्रद होता...
भात में माड़ रहना ही चाहिए...सब्जी भी झोलदार योग्य चाहिए...(5)...
एलुमीनियम बर्तन नहीं चाहिए...प्लास्टिक वस्तु भी नहीं चाहिए...
गैस व स्टोव से नहीं बनावे...रात्रि में कोई वस्तु नहीं बनावे...(6)...
पात्र की आयु व प्रकृति अनुसार...उत्तम रीति से देवे आहार...
पथ्य-अनुमान व मात्रानुसार...सप्त गुण युक्त हो देवे आहार...(7)...
दाता हो सोलह गुणों से युक्त...तन-मन-वचन व वस्त्र शुद्ध...
नेलपॉलिश लिपिस्टिक से रिक्त...हाथ व नाखून स्वच्छता युक्त...(8)...
क्षेत्र हो प्रासुक प्रकाश युक्त...प्रदूषण रहित स्वच्छता युक्त...
शांत-शीतल पवन सहित...जीव-जंतु व दुर्गंध रहित...(9)...

Scanned by TapScanner

अयोग्य दान व सेवा, न करणीय...
'कनक' स्व-पर हेतु, द्वय सेवनीय...(6)

❋❋❋

(9) सुखी होने के धार्मिक-कर्म सैद्धांतिक-वैज्ञानिक कारण (हैप्पी हार्मोन)

(चाल : सायोनारा....., तुम दिल की.....)

सुखी होने के कारणों को जानो...अंतरंग-बहिरंग स्वरूप मानो...
अंतरंग कारणों को प्रमुख मानो...बहिरंग कारणों को निमित्त जानो...(स्थायी)...
जीवों का स्वभाव तो अनंत सुख...कर्म के बंधनों से मिलता दुःख...
कर्मक्षय से मिले अनंत सुख...क्षयोपशम से मिले आंशिक सुख...
बयालीस (42) सातादि पुण्योदय के कारण...
सुख हेतु मिले अन्तः बाह्य कारण...
समता-शांति-पवित्रादि अंतरंग कारण...
दान-दया-सेवादि भी अंतरंग कारण...(1)...
विज्ञान भी शोध रहा निम्न कारण...पचास प्रतिशत सुख हेतु जींस कारण...
जिससे विभिन्न हार्मोंस का होता स्राव...जिससे होता है सुख का अनुभव...
कार्य की सफलता या प्रशंसा के कारण...देह में स्राव होता हार्मोन 'डोपामिन'...
जिससे सुख का भी अनुभव होता...'चिडचिडापन' भी दूर हो जाता...(2)...
निःस्वार्थ सेवा से स्राव (होता) 'ऑक्सीटोसिन'...
जिससे सुख का होता अनुभवन...
होती संतुष्टि व सुधरता है संबंध...तनाव दूर होता बढ़ता है आनंद...
'सेरोटोनिन' स्राव से मूड उत्तम होता...क्रोध का भाव भी क्षीण है होता...
प्रसन्नता से बढ़ता है यह हार्मोन/(सेरोटोनिन)...
तथाहि भ्रमण व नारियल केला भक्षण...(3)...
'प्रोजेस्टेरोन' 'एस्ट्रोजन' संतुलित होता...तब मूड का भी संतुलन होता...
आत्मविश्वास बढ़े-क्रोध होता है क्षीण...
सात्विक जीवन से बढ़ते दोनों हार्मोन...
शांतिप्रद संगीत (श्रवण) व उत्तम प्रिय काम...
व्यायाम प्राणायाम योगासन ध्यान...
सात्विक मधुर व स्निग्ध भोजन...
उत्तम भाव-कार्य सुखी होने के कारण...(4)...
उत्तम भाव व कार्यों के कारण...पुण्य कर्मों का होता है बंधन...
आत्मविशुद्धि से मिलता आनंद...
'कनकनन्दी' का लक्ष्य परम आनंद...(5)...

आहार दान से लाभ अनेक...दान-सेवा-वैयावृत्ति-पात्र लाभ...
चारों दान भी होते गर्भित...सांसारिक सुख व मोक्ष प्राप्त...(10)...
भाव हो निर्मल समता सहित...आत्म-विकास के भाव सहित...
यह है उत्तम आहार पद्धति...'कनक' को चाहिए योग्य पद्धति...(11)...

❋❋❋

(8) सेवा-दान की महानता

(चाल : छिप गया कोई रे.....)

सेवा-दान महान् है, पापी नहीं करते...
महान् पुण्यशाली ही, दोनों कार्य करते...
सेवा युक्त दान जो, करते वे महान्...
दोनों से जो रिक्त होते, वे सब पापी जन...(स्थायी)...
निःस्वार्थ भाव से जो, सेवा-दान करते...
स्व-पर-उपकार भी, वे जन करते...
इह-परलोक में भी, वे विकास करते...
स्वर्ग से मोक्ष तक, वे प्राप्त करते...(1)
सेवाभावी नहीं दास, न होते वे नीचे...माता जो सेवा करती,
क्यों वे होती नीच... दान देना भी है सेवा, सेवा भी दान...
दोनों का समन्वय तो, महान् काम...(2)
दोनों के कारण ही है, परिवार व्यवस्था...
दोनों के कारण ही है, सामाजिक व्यवस्था...
दोनों के कारण ही है, विश्व नागरिकता...
दोनों से बनती है, दान तीर्थ /(धर्मतीर्थ) व्यवस्था...(3)
सातिशय पुण्य बंध, भी इससे होता...
तीर्थंकर नामकर्म, भी इससे बंधता...
हर धर्म-देश में भी, इन्हें मिली मान्यता...
दोनों से रहित जो, उनमें न मानवता...(4)
संतुष्टि शांति तृप्ति, दोनों से मिलती...
तन-मन-आत्मा में, स्वस्थता आती...
प्रेम-संगठन व परस्पर, सहयोग बढ़ता...
विश्वास-सहअस्तित्व में विकास होता...(5)
व्यापार संकीर्णता, भेदभाव रिक्त...
यथायोग्य पात्रानुसार, दोनों ही विहित...

आ.श्री कनकनन्दीजी द्वारा रचित 4 ग्रन्थों के विमोचन के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले बच्चों को प्राप्त पुरस्कार राशि को उनके द्वारा स्वेच्छिक ज्ञान दान से प्रकाशित ...

नाम : खुशी, छबि, रानी, उन्नति, ईशान, हित, गीत ... ग.पु. कॉलोनी, सागवाड़ा

Scanned by TapScanner